JIRSCH Vol.: 04 II Issue 03 II Pages 06-14 II Sept 2020

कोविड 19: भारत चीन संबंधों का भविष्य

ISSN - 2456-7728
http://ijirhsc.com/

डॉ शशि वर्मा
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय महारानी सुदर्शन महाविद्यालय ,
बीकानेर (राजस्थान)

ISSN - 2456-7728
http://ijirhsc.com/

सारांश

21वीं शताब्दी में जब पूरी दुनिया विकास के नए आयाम स्थापित कर रही थी। प्रत्येक इंसान बेखौफ हो अपने ही गगन में उन्मुक्त हो उड़ानें भर रहा था ।अचानक कोविड-19 या कोरोना नामक महामारी ने उसे अपने घरों में कैद होने को मजबूर कर दिया ,और दुनिया थम गई । जैसे किसी उड़ते हुए बाज को तीर से घायल कर पिंजरे में बंद कर दिया हो ,जहां वह बेबस है । डरा हुआ सोच रहा है कि क्या उसका अंत निकट है ? क्या वह लंबी जिंदगी जी पाएगा ? क्या पुनः उन्मुक्त उड़ान भर पाएगा ? हर रोज हमारे जेहन में भी यह प्रश्न विचरता है, क्या दुनिया पहले जैसी हो पाएगी? क्या एक इंसान दूसरे इंसान को बिना डरे गले लगा पाएगा ? उस से हाथ मिला पाएगा? क्या हम विकास की राह पर पुनः चल पाएंगे? ऐसा होगा तो कब होगा?

वर्तमान समय में पूरा विश्व समुदाय इस महामारी से जंग लड़ रहा है ऐसे समय में विश्व के सभी देशों को इस महामारी से निपटने के लिए आपसी सहयोग समन्वय व सहभागिता की आवश्यकता है ।ऐसे जटिल विश्व परिदृश्य में विश्व के दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन सीमा विवाद में उलझ हुऐ हैं। बहुत ही दुखद है ।सीमा पर खूनी झडपें हो रही है। देश के अंदर एक ओर लोग कोरोना से मर रहे हैं और दूसरी ओर सीमा पर सैनिक। जहां भारत का आरोप है कि गलवान घाटी के किनारे चीनी सेना अवैध रूप से टेंट लगाकर सैनिकों की संख्या में वृद्धि कर रही है । चीनी सेना सैकड़ों किलोमीटर तक अपनी सीमा से निकलकर भारत की सीमा की ओर बढ़ चुकी है वहीं दूसरी ओर चीन का आरोप है कि भारत गलवान के पास रक्षा संबंधी अवैध निर्माण कर रहा है उक्त घटना क्रम भारत चीन के मध्य सीमा विवाद एवम् संबंधों की जटिलता को प्रदर्शित करते हैं।

ISSN - 2456-7728

मूल शब्द - भारत चीन संबंध, गलवान घाटी कोविड-19, सीमा विवाद राजनीतिक संबंध आर्थिक संबंध

http://ijirhsc.com/

भारत और चीन दोनों ने लगभग एक साथ साम्राज्यवादी शासन से मुक्ति पाई भारत 1947 में आजाद हुआ और चीन 1949 में। भारत ने जहां सच्चे अर्थों में लोकतंत्र के मूल्यों को खुद में समाहित किया वहीं चीन ने साम्यवादी शासन व्यवस्था को अपनाया। यदि हम भारत-चीन सीमा विवाद की बात करें तो हजारों वर्षों तक तिब्बत ने इन

दोनों के बीच रहकर दोनों को भौगोलिक रूप से अलग रखा लेकिन 1950 में चीन ने तिब्बत पर आक्रमण कर उसे अपने कब्जे में ले लिया तब भारत और चीन की सीमाएं मिलनें लगी और दोनों पड़ोसी हो गए।

1954 में दोनों ने हिंदी चीनी भाई भाई के नारे के साथ पंचशील सिद्धांत पर हस्ताक्षर किए जिसका प्रमुख उद्देश्य था शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति लगभग 5 वर्ष तक दोनों के रिश्ते भाई भाई वाले रहे लेकिन 1959 में भारत ने तिब्बत के आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा को अपने अनुयायियों के साथ हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में रहने की अनुमति दे दी तभी से दोनों के बीच रिश्ते बिगड़ने लगे आरोप प्रत्यारोप का दौर प्रारंभ हुआ। दोनों एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए जिसकी परिणति 1962 का खूनी संघर्ष के रूप में हुई। दोनों के मध्य सीमा विवाद उभरने लगा।

भारत चीन :विवाद के मुद्दे

भारत चीन सीमा लद्दाख, हिमाचल प्रदेश उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश पांच राज्यों से मिलती है जो लगभग 3500 किलोमीटर है।

1 पोगोत्सो झील विवाद एवम् फिंगर एरिया विवाद

प्रमुख विवाद लद्दाख सीमा पर है, क्योंकि वहां पर आज तक LAC (सीमा रेखा) निश्चित नहीं है। इसका कारण है लद्दाख क्षेत्र में नुकीली पहाड़ियाँ है,और पोगोत्सो झील है। यह झील बेहद खूबसूरत है, इसका पानी बहुत स्वच्छ है। LAC झील के ऊपर होकर निकलती हैं अभी इसी क्षेत्र में खूनी झड़प हुई थी इस क्षेत्र में जो पहाड़िया हैं उनकी संरचना फिंगर (उंगलियों) जैसी है।भारत 8 फिंगर तक अपना क्षेत्र मानता है जबकि चीन 4 फिंगर तक भारत का क्षेत्र मानता है 4 फिंगर पर अपना अत: लद्दाख क्षेत्र में मुख्य विवाद 4 फिंगर से लेकर 8 फिंगर तक का है। चुंकि कोविड-19 महामारी के कारण भारत ने चीन सीमा पर सैनिक गतिविधियों को कम कर दिया था चीन ने इसका फायदा उठाया और अपने सैनिकों की बढ़ोतरी कर दी। इस सीमा पर पहले जहाँ तीन यूनिट रहती थी, उनकी संख्या 9 कर दी। भारत ने जब वहां पेट्रोलिंग की तब उन्होंने चीन की सेना को वहां तंबू लगाकर रहते हुए देखा तो उन्हें वहां से हटाने का प्रयास किया इसलिए भारत और चीन के सैनिकों के बीच खूनी झड़प हुई।

2 सड़क निर्माण कार्य

भारत लद्दाख क्षेत्र में LAC के पास निर्माण कार्य कर रहा है जैसे दौलत बेग ओल्डी और डरबुक को जोड़ने के लिए सड़क बना रहा है जो कि भारत की करकोरम दर्रा तक पहुंच को बढ़ा देगी। चीन नहीं चाहता कि भारत सड़क का निर्माण करें क्योंकि सड़क निर्माण हो जाने पर LAC के पास भारत की स्थिति मजबूत होगी,चुकि अक्साई चीन पर चीन पहले ही अपना अधिकार स्थापित कर चुका है। यदि भारत सड़क का निर्माण नहीं करता है तो उसे

ISSN - 2456-7728 http://ijirhsc.com/

अक्साई चीन तक पहुंचने मैं पूरा दिन लग जाएगा और यदि सड़क का निर्माण करता है तो चीन अधिकृत अक्साई चीन पर पहुंचने में उसे आधा घंटा लगेगा। भारत द्वारा वहां सड़क निर्माण करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि उससे भारत की सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ होती है। कभी अक्साई चीन भी भारत का क्षेत्र था लेकिन 1962 में चीन ने उसे अपने कब्जे में ले लिया। भारत बहुत जोर देकर अक्साई चीन पर अपनी दावेदारी प्रस्तुत नहीं करता क्योंकि उसका मानना है कि अक्साई चीन पर एक पौधा भी नहीं उगता वहां बहुत बर्फ पड़ती है। भारत द्वारा वहां अपना अधिपत्य स्थापित करना अर्थात चीन के साथ युद्ध का बिगुल बजाना है। अक्साई चीन में बर्फ से ढकी खूबसूरत पहाड़ियां है यदि उसे विकसित किया जाए तो वहां में मिनी स्विटज़रलैंड का आभास मिल सकता है। शानदार पर्यटक स्थल अक्साई चीन को बनाया जा सकता है

3 अरूणाचल प्रदेश

चीन अरुणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार मानता है क्योंकि कभी अरुणाचल प्रदेश तिब्बत का हिस्सा था।आज तिब्बत पर चीन का अधिकार है इसलिए वह अरुणाचल को भी अपना क्षेत्र मानता है। भारत और चीन के बीच अरुणाचल प्रदेश में जो मैकमोहन सीमा रेखा है, चीन उसे नहीं मानता उसका कहना है कि जब तिब्बत चीन का हिस्सा है तो अंतरराष्ट्रीय सीमा समझौते पर हस्ताक्षर करने का अधिकार तिब्बत को नहीं है चीन को है। भारत का कहना है कि भारत और तिब्बत के बीच मैकमोहन सीमा रेखा समझौता सिद्धांत पर 1914 में हस्ताक्षर हुए थे तब चीन को भी आमंत्रित किया गया था लेकिन चीन ने उस समय वहां अपनी कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। और आजअरुणाचल प्रदेश को अपना हिस्सा मानता है।चीन ने अरुणाचल प्रदेश में लगभग 90 हजार किलोमीटर जमीन को अपने कब्जे में ले रखा है।

4 ब्रह्मपुत्र

चीन ने ब्रह्मपुत्र नदी पर कई बांध बना रखे हैं और उसका पानी वह नदियों के जरिए उत्तरी चीन में ले जाना चाहता है चीन भारत को परेशान करने के लिए अनेकों बार ब्रह्मपुत्र नदी किनारे होने वाले निर्माण कार्य का मलबा ब्रह्मपुत्र में डालता रहता है भारत अनेकों बार इस समस्या को आपसी बातचीत से हल करने की कोशिश कर चुका है लेकिन चीन इस पर कोई ध्यान नहीं देता।

5 डोकलाम

डोकलाम क्षेत्र चीन, भारत और भूटान के बीच सिक्किम के पास स्थित है। चीन चाहता है डोकलाम चीन को दे दिया जाए और चीन उसके बदले भूटान को कहीं और जगह दे दे। एक बार भूटान डोकलाम को चीन को देने को राजी भी हो गया था। भारत ने इस पर अपना विरोध प्रकट किया।

ISSN - 2456-7728 http://ijirhsc.com/

चीन और भूटान के बीच कोई राजनयिक संबंध नहीं है। लेकिन भारत और भूटान के बीच समझौता है कि भूटान विदेश नीति निर्धारण में भारत की सलाह लेगा और उसके बदले भारत सदैव भूटान की रक्षा के लिए तत्पर रहेगा। भूटान ने इस संबंध में भारत से सलाह कर चीन को डोकलाम देने से मना कर दिया चीन इस कारण भी भारत से खफा है।

6 स्टेपल वीजा विवाद

कश्मीर एवं अरुणाचल के यात्री जो चीन जाते हैं चीन उनको स्टेपल वीजा देता है क्योंकि इस क्षेत्र को वह अपना मानता है जिसके लिए भारत उसे मना करता है और भारत स्टेपल वीजा पर अपनी मुहर नहीं लगाता। 2007 में चीन में अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री को यह कहकर वीजा नहीं दिया कि आपको अपने देश में आने के लिए वीजा की जरूरत नहीं है।

7 नेपाल का नया नक्शा

नेपाल ने अभी हाल में एक नक्शा जारी किया है। जिसमें उसने भारत के कई हिस्सों को अपना दिखाया है। जिसमें प्रमुख है काला पानी, लिपुलेख दर्रा और लिपियाधुरा। भारत ने उस नक्शे पर अपनी आपत्ति जताई है। भारत के तीर्थयात्री लिपुलेख दर्रे से होकर ही कैलाश मानसरोवर को जाते हैं तो यह तो हमेशा से ही भारत का ही था फिर अचानक नेपाल अपनी दावेदारी लिपुलेख दर्रा पर क्यों दर्ज करा रहा है स्पष्ट है कि उसे चीन द्वारा ऐसा करने के लिए कहा जा रहा है।

8 मालदीव्स

मालदीव्स के अंतर्गत 1200 छोटे द्वीप हैं, जिनमें से16 द्वीपों को चीन ने 2016 में लीज पर लिया था। उसने प्रत्येक द्वीप 30 करोड़ की राशि खर्च की है । चीन का कहना है कि वह वहां पर अपना व्यवसाय विकसित कर रहा है लेकिन भारत को डर है कि वह वहां पर सैनिक गतिविधियां प्रारंभ कर सकता है। मालदीव केरल से मात्र 684 किलोमीटर है और भारत में पहुंचने के लिए उसे मात्र 25 मिनट लगेंगे। जो भारत के लिए बहुत खतरनाक स्थिति हो सकती है। चीन वहां पर कृत्रिम द्वीपों का भी निर्माण कर रहा है

9 अनुच्छेद 370

भारत ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को खत्म कर जम्मू कश्मीर और लद्दाख दोनों को अलग-अलग केंद्र शासित राज्य घोषित किया है।चीन ने इस बात का भी विरोध कर रहा है क्योंकि लद्दाख के बड़े क्षेत्र को वह अपना क्षेत्र मानता है और वहां पर केंद्र के शासन से उसको परेशानी हो रही है। अभी तक जम्मू कश्मीर

ISSN - 2456-7728 http://ijirhsc.com/

में आतंकवादियों का बोलबाला था जिन्हें पाकिस्तान और उसका मित्र राष्ट्र चीन दोनों ही पोषित करते थे। जम्मू कश्मीर में उनकी दखलअंदाजी थी।कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म होने और उसके केंद्र शासित राज्य बनने से वहां पर चीन दखलअंदाजी पूरी तरह समाप्त हो गई ।यह मामला संयुक्त राष्ट्र संघ में भी उठाया गया लेकिन भारत ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया 370 अनुच्छेद खत्म करना उसका आंतरिक मामला है। इस पर वह किसी की भी दखलंदाजी बर्दाश्त नहीं करेगा। कि जिससे चीन बौखलाया हुआ है।

10 बहुराष्ट्रीय कंपनियां

माननीय प्रधानमंत्री की मेक इन इंडिया योजना के तहत बहुत सारी बहुराष्ट्रीय कंपनियां, जो अभी तक चीन में थी ।वह चीन की तानाशाही प्रवृत्ति से परेशान होकर भारत में आना चाहती हैं । भारत में उन कंपनियों के प्रस्तावो को स्वीकार कर उन्हें भारत में समस्त सुविधाएं एवं स्वायतता देने के प्रावधान स्वीकार किया है ।

यह तो भारत और चीन के बीच विवाद के बिंदु हैं लेकिन इन विवादों के बावजूद भारत और चीन के बीच आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक शैक्षणिक स्तर पर संबंध बहुत मजबूत है। हम इन संबंधों पर एक दृष्टि डाल लेते हैं

भारत और चीन के बीच संबंध

भारत चीन दोनों पड़ोसी देश एवं विश्व की उभरती दो महाशक्तिया हैं। दोनों के बीच लंबी सीमा रेखा है। इन दोनों देशों में प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंध रहे हैं। भ चीन के लोगों ने प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म की की शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत के विश्वविद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय एवम् तक्षशिला विश्वविद्यालय को चुना क्योंकि उस समय संसार में यही दो विश्वविद्यालय शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र थे उस काल में यूरोप के लोग जंगली अवस्था में थे वर्ष 1949 में चीन की स्थापना के बाद भारत ने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। इस तरह भारत चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर समाजवादी देश बना। चीन एवं भारत द्वारा प्रदत्त पंचशील का सिद्धांत दुनिया की शांति एवं सुरक्षा हेतु एक महत्वपूर्ण योगदान था जिसका आधार था शांतिपूर्ण सह अस्तित्व की नीति। परंतु चीन ने इन प्रगाढ़ मैत्री संबंधों को ताख पर रखकर 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया और भारत की बहुत सारी जमीन पर कब्जा करते हुए 21 नवंबर 1962 को एक पक्षीय युद्ध विराम की घोषणा कर दी। उस समय से आज तक दोनों के संबंध सामान्य नहीं हो पाए हैं जवाहरलाल नेहरु की मृत्यु के बाद लाल बहादुर शास्त्री जी ने चीन की तरफ दोस्ती का हाथ बढ़ाया परंतु भारत को सफलता नहीं मिली क्योंकि चीन ने 1965 के भारत-पाक युद्ध में पाकिस्तान का एकतरफा समर्थन किया जिसके बदले पाकिस्तान ने भारत के शत्रु की हैसियत से चीन को काराकोरम क्षेत्र में बसा दिया एवं पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर का 2600 वर्ग मील भूभाग चीन को सौंप दिया

ISSN - 2456-7728
http://ijirhsc.com/

राजनीतिक संबंध

1950 से 1959 तक भारत और चीन के बीच में बहुत ही मधुर संबंधित है 1962 के युद्ध के कारण दोनों के बीच कट्टर दुश्मनी हो गई संबंधों को सुधारने की दिशा में प्रयास करते हुए सर्वप्रथम 1966 में चीन के राष्ट्रपति जियांग जोमिन ने भारत की तीन दिवसीय यात्रा की जिसके अंतर्गत वास्तविक नियंत्रण रेखा पर एक दूसरे पर आक्रमण नहीं करने का वचन दिया गया दोनों देशों ने सीमा पर शांति व्यवस्था बनाए रखने का समझौता किया इस यात्रा के समय 11 सूत्रीय समझौता किया गया 1976 से दोनों के संबंध सुधरने लगे।वर्ष 1988 में भारतीय प्रधानमंत्री राजीव गांधी नें द्विपक्षीय सम्बंधों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया शुरू करते हुए चीन का दौरा किया। दोनों पक्ष सीमा विवाद के प्रश्न पर पारस्परिक स्वीकार्य समाधान निकालने तथा अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रुप से द्विपक्षीय संबंधों को विकसित करने के लिए सहमत हुए।

1992 में भारतीय राष्ट्रपति आर वेंकटरमन तथा 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेई जी चीन दौरे पर गए । डॉ मनमोहन सिंह 2008, 2013 चीन यात्रा पर गए। 2011 तक भारत और चीन के संबंध सामान्य हो गए 2011 को चीन भारत विनिमय वर्ष तथा 2012 को चीन भारत में मैत्रीय एवं सहयोग वर्ष के रूप में मनाया गया । 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने चीन का दौरा किया इसके बाद चीन ने भारतीय तीर्थ यात्रियों के लिए नाथूला दर्रा खोलने का फैसला किया ।अक्टूबर 2019 को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत आए। चेन्नई में दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया। इ 1976 से लेकर 2020 तक और भारत और चीन के उच्च स्तरीय अधिकारी एवम् राजनेताओं ने चीन और भारत की अनेकों यात्राएँ की। अनेकों अनेक आर्थिक,सांस्कृतिक,रक्षा संबंधी, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी व शैक्षणिक समझौते किए विशेष तौर से दोनों के आर्थिक संबंध बहुत प्रगाढ़ हुए।

आर्थिक संबंध

भारत और चीन के बीच आर्थिक संबंध हमेशा से ही अच्छे रहे हैं 1962 के युद्ध के बाद अक्टूबर 1967 में भारत और चीन के मध्य तेल एवं गैस को प्राप्ति करने की भागीदारी के लिए एक समझौता किया गया। मई 2000 में भारत के राष्ट्रपति के आर नारायण ने चीन की यात्रा कर दोनों देशों के सभी हितकर मुद्दों पर वार्तालाप तथा भारत व चीन में द्विपक्षीय आर्थिक व व्यापार संबंधों में वृद्धि करने के लिए प्रतिबद्धता प्रकट की पिछले कुछ वर्षों में भारत और चीन के बीच व्यापार एवं आर्थिक संबंधों में तेजी से वृद्धि हुई है। 2002 में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2.92 बिलियन अमेरिकन डॉलर था जून 2008 में बढ़कर 41.85 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया । 2014 में 58.29 बिलीयन अमेरिकी डॉलर तथा वर्ष 2019 में भारत और चीन के बीच होने वाला व्यापार 92. 6 8 बिलियन डॉलर का था। चीन से भारत मुख्य इलेक्ट्रिक उपकरण मैकेनिकल सामान

ISSN - 2456-7728 http://ijirhsc.com/

कार्बनिक आदि का आयात करता है वही भारत से चीन को मुख्य रूप से खनिज ईंधन और कपास आदि का निर्यात किया जाता है भारत में चीनी टेलीकॉम कंपनियां 1999 से ही है और वह यहां काफी पैसा कमा रहे हैं इससे भारत को भी लाभ हुआ है भारत में चीनी मोबाइल का मार्केट भी बहुत बड़ा है दिल्ली मेट्रो में एस यू जी सी नाम की चीनी कंपनी काम कर रही है।भारतीय सोलर मार्केट चीनी उत्पाद पर है निर्भर है इसका दो बिलियन डालर का व्यापार है भारत का थर्मल पावर भी चीनियों पर निर्भर है। पावर सेक्टर के 70 से 80 फ़ीसदी उत्पाद चीन से आते हैं

भारत में औद्योगिक ई-कॉमर्स तथा अन्य क्षेत्रों में 1000 से अधिक चीनी कंपनियों ने निवेश कर रखा है। भारतीय कंपनियां भी चीन के बाजार में सक्रिय रुप से विस्तार कर रही हैं व्यापारिक एवं आर्थिक स्तर पर भारत और चीन के बीच अनेकों अनेक समझौते हुए हैं यहां तक की दीवाली भारत में मनाई जाती है पटाखे चीन से आते हैं। होली के रंग, पतंग का मांझा चीन से आते हैं 2020 में कोरोना के लिए जो दवाइयां बनी उनका रॉ मैटेरियल भी चाइना से भारत आया था और भारत ने दवाइयां तैयार कर पूरे विश्व में वितरित की भारत और चीन के बीच कच्चा माल और तैयार माल का आदान-प्रदान निरंतर होता रहता है अर्थात दोनों के रिश्ते आर्थिक और व्यापारिक स्तर पर बहुत प्रगाढ़ हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

भारतीय कंपनियों ने चीन में तीन सूचना प्रौद्योगिकी कोरिडोर स्थापित किए हैं जो सूचना प्रौद्योगिकी तथा उच्च प्रौद्योगिकी में भारत चीन सहयोग को बढ़ावा देने में मदद करते हैं

रक्षा संबंधी

भारत और चीन के बीच(हैंड इन हैंड) संयुक्त आतंकवाद रोधी अभ्यास के अब तक 8 दौर आयोजित हो चुके हैं

People-to-people connect प्रोग्राम

1 दोनों देशों ने कला, प्रकाशन, मीडिया, फिल्म, टेलीविजन संग्रहालय, खेल, युवा पर्यटन, स्थानीय व पारंपरिक चिकित्सा, योग तथा थिंक टैंक के क्षेत्र में आदान-प्रदान तथा सहयोग पर बहुत अधिक प्रगति की है।

2 दोनों देशों ने सिस्टर सिटी तथा प्रांतों के 14 जोड़ें स्थापित किए हैं। हुई फुजियान प्रांत और तमिलनाडु को सिस्टर स्टेट के रूप में जबकि चिन झोऊ एवम् चेन्नई नगर को सिस्टर सिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है।

शैक्षणिक संबंध

ISSN - 2456-7728
http://ijirhsc.com/

भारत और चीन के बीच 2006 में शैक्षणिक आदान-प्रदान कार्यक्रम (ई ई पी)पर समझौता हुआ । इसके तहत दोनों देशों द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में25 -25 छात्रों को छात्रवृत्ति दी जा रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की चीन यात्रा के दौरान दोनों देशों ने 15 मई 2015 को एक नए शिक्षक विनियम कार्यक्रम (ई ई पी) पर हस्ताक्षर किया इसमें व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में साझेदारी का प्रावधान है ।

वर्तमान में चिकित्सा के क्षेत्र में लगभग 24 हजार बच्चे अभी चीन के विभिन्न मेडिकल विश्वविद्यालय में पढ़ रहे हैं । जिनमें एक मेरी बिटिया भी है चीन में अपनी बिटिया के मेडिकल यूनिवर्सिटी में एडमिशन कराने के संदर्भ में मैं स्वयं 8 दिन चीन के तिआनजिन शहर में रह कर आई हूं राजनीति विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते मैंने वहां कुछ लोगों से भारत चीन संबंधों पर बात की मुझे महसूस हुआ कि भारत और चीन में परंपरागत शत्रुता होने के साथ परंपरागत मित्रता भी है जिस तरीके से दो भाई लड़ते रहते हैं लेकिन एक दूसरे का अहित नहीं करते उसी तरीके का संबंध भारत व चीन के मध्य है। चीन में अपने प्रवास के दौरान मुझे यही महसूस हुआ कि मेरी बिटिया यहां पूर्ण सुरक्षित है।

अन्ततःविश्व के सभी राष्ट्र व उनके राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्रभक्ति की भावना तो मन में रखें, साथ ही मानवता के प्रति प्रेम को अपने हृदय में जागृत करें । क्योंकि एक राज्य एक मनुष्य का ही वृहद रूप है। हम मनुष्य जैसी प्रवृत्ति रखेंगे राज्य वैसा ही बनेगा। सीमा पर जब भी कोई सैनिक अपना आत्मोत्सर्ग(बलिदान) करता है तब एक मानव मरता है, हमें अपने देश की सीमा की सुरक्षा के साथ मानव जाति की सुरक्षा और सम्मान को अधिक महत्व देना है। निष्कर्षतया भारत और चीन दोनों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में प्रगाढ़ संबंध है विशेष रुप से आर्थिक संबंध ।चीन भारत से अपने संबंध खराब नहीं कर सकता क्योंकि जिस तरह से एक दुकानदार को ग्राहक की अधिक आवश्यकता होती है ।उसी तरीके से चीन को हमारी ज्यादा आवश्यकता है ।हमें भी चीन की आवश्यकता है। क्योंकि हम भी औद्योगिक क्षेत्र में चीन पर निर्भर है। यदि हमें चीन से मुकाबला करना है स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना होगा हम छोटी-छोटी चीजें के लिए चीन के मोहताज है अर्थात दीवाली के पटाखे, लाइट, होली के रंग, पतंगबाजी के लिए मांझा चीन से आते है। क्या हम इनका निर्माण भारत में नहीं कर सकते? जब मैं दीवाली पर चीन में थी तब विश्वविद्यालय प्रशासन ने बच्चों को पटाखे छोड़ने की अनुमति नहीं दी। उन्होंने कहा कि पटाखे से शोर और प्रदूषण दोनों उत्पन्न होते हैं और उनके द्वारा निर्मित पटाखों को हम भारत में चलाते हैं । क्या हम बिना पटाखे चलाए नहीं रह सकते? अपने देश में इतनी छोटी चीजों का भी निर्माण नहीं कर सकते ? इस तरीके के उद्योगों में तो ज्यादा पैसा भी नहीं लगता ।

ISSN - 2456-7728
http://ijirhsc.com/

हमारी सरकार को इस ओर बहुत संजीदगी से ध्यान देना होगा। और भारत में लघु और कुटीर उद्योगों को बड़ी मात्रा में विकसित करना होगा यदि हम आने वाले समय में भारत चीन संबंधों के भविष्य की ओर सोचते हैं तो दोनों ही देशों को कुछ बिंदुओं पर ध्यान देना होगा।

भारत चीन संबंधों का भविष्य

1 भारत और चीन के बीच सीमा बहुत लंबी है उस सीमा को परिभाषित करने के साथ सीमांकन और परिसीमन के जाने की आवश्यकता है।

2 पिछले 10 वर्षों में द्विपक्षी व्यापार में चीन ने भारत के मुकाबले 750 बिलीयन डॉलर की बढ़त बना ली है जिससे कम करना बहुत आवश्यक है भारत को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में ईमानदारी से प्रयास करने होंगे। भारत को स्वयं बड़ी संख्या में अपने लघु और कुटीर उद्योग विकसित करने होंगे। जब तक बहुत जरूरी ना हो भारत के बाहर से वस्तुओं को ना मंगाया जाए।

3 दोनों देशों को मैत्रीपूर्ण सहयोग की प्रवृत्ति को विकसित करने के साथ आपसी मतभेदों को दूर करने का भी प्रयास करना चाहिए।

4 चीन को चाहिए कि वह पाकिस्तान का साथ भारत विरोधी मुद्दों पर ना दें आतंकवाद को खत्म करने के लिए भारत के साथ मिलकर प्रयास करें।

5 भारत को भारत चीन सीमा पर सड़क निर्माण कार्य पूर्ण करना चाहिए क्योंकि यह भारत की सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है।

6 भारत चीन को किसी अन्य राष्ट्र या महाशक्ति के बहकावे में आकर अपने संबंधों को नहीं बिगड़ना चाहिए। और नहीं एक दूसरे के ऊपर युद्ध को तो अपना चाहिए क्योंकि युद्ध में सब कुछ खोया जा सकता है पाया कुछ भी नहीं जा सकता।

7 चीन संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद मैं भारत के स्थाई सदस्यता के प्रति प्रतिकूल रुख अपनाएं

विश्व में भारत और चीन दोनों विशाल देश हैं यदि वे दोनों अपने संबंध मैत्रीपूर्ण रखते हैं तो विकास की एक नई परिभाषा विकसित कर सकते हैं।

अंत मे भारत चीन सहित प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय प्रेम के साथ मानवता के प्रति प्रेम को सर्वोपरि स्थान प्रदान करें । मानव जाति के उत्थान एवं विकास के लिए कार्य करें। विश्व समाज, विश्वराज्य विश्व गांव की कल्पना को साकार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करें।

ISSN - 2456-7728 http://ijirhsc.com/